दम मदार

786/92

बेड़ा पार

मुख़्तसर हालात ज़िन्दा शाह मदार

मौलाना मुहम्मद नस्तईन खाँ वाक़िफ
कन्नौज (यु.पी.)

07897041486
07742845903
Www.MadaariMedia.Com

دم مدار بیڑا پار

MADAARI MEDIA

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح

سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

फेहरिस्ते मजामीन

अदद	मजमून	सफा
1	पैदाइश शरीफ	3
2	इस्मे ग्रामी	3
3	तालीमो तरबियत	4
4	बैतौ खिलाफत	4
5	ज़ियारते मक्का मदीना	5
6	आमदे हिन्दुस्तान	6
7	चिल्ला गाहें	9
8	शाहों के तकियाँ	9
9	मकामे कुतबुल मदार	10
10	कुतबुल मदार उवैसी	12
11	खुलफाओ मुरीदीन	13
12	सिलसिलऐ मदारिया का फैज़	14
13	करामत	15
14	आमदे मकनपुर	16
15	विसाल	16
16	गुस्ल शरीफ	16
17	नमाज़े जनाज़ा	16

नअते पाक

शेख़े तरीक़त मुफ़्ती मो. इसराफील साहब साक़ी मकनपुर शरीफ़

शरफ हुजूरिये तैबा का भी अता कर दें।
ये और हुस्ने करम मुझ पे अय खुदा कर दें।

जमाले रूये नबी से सदा मुनव्वर हो।
इलाही दिल को मेरे अयसा आइनाकर दें।

उसे ज़माना मिटाऐगा क्या सितम करके।
मदीने वाला जिसे ज़िन्दगी अता कर दें।

बताओं कौन सखी है मेरे नबी के सिवा।
जो माँगने से सिवा दे बुला–बुला कर दे।

फुजूल मन्नते चारा गरी भी क्या करना।
गमे नबी है कोई उसकी क्या दवा कर दें।

उड़ा के लाती है बूये रसूल तैबा से।
कभी तो रूख मेरे घर का भी अय सबा कर दें।

तेरी निगाह कहाँ जामे जम कहाँ साक़ी।
तू एक निगाह से इस रिन्द का भला कर दे।

कतअ शरीफ

मौलाना मु. नौशाद खाँ शाद, गुरौली कन्नौज (यू.पी.)

मदारे पाक का जो भी गुलाम होता है।
वो अपने वक्त का लोगों इमाम होता है।
वहाँ बरसती है दिन रात रहमतों की घटा।
तुम्हारा जिक्र जहाँ सुबहो शाम होता है।

मनक़वत शरीफ

मौलाना मो. नसतईन खाँ वाक़िफ़ कन्नौज (यू.पी.)

जश्ने उर्से मदारे दो आलम हम हमेशा मनाते रहेंगे।
चूम कर तेरे रौजे की जाली अपनी क़िस्मत जगाते रहेंगे।

सब के सीनो में है तेरी चाहत और सब को है तुझसे हक़ीदत।
दीप तेरी मुहब्बत के हम भी अपने दिल में जलाते रहेंगे।

हर घड़ी और हर एक लम्हा बस रहें ज़िक्र लब पर खुदा का।
हुक्म है ये मदारे जहाँ का हम सभी को बताते रहेंगे।

हिन्द से शिर्कों बिदअत मिटाने लाये तशरीफ कुतबे दोआलम।
कलिमए हक़ से महकी फिज़ा है लोग ईमान लाते रहेंगे।

जो है दुश्मन मदारे जहाँ का वो है दुश्मन रसूले खुदा का।
तोड़कर ऐसे लोगों से रिश्ता हम मकनपूर जाते रहेंगे।

टेकरी गद्दियाँ और चिल्ले कहते हैं तेरी अज़मत के किस्से।
लाख मुनकिर हो कोई मगर ये तेरा अहसाँ जताते रहेंगे।

हमको कहती है दुनिया मदारी जब तलक ज़िन्दगी है हमारी।
आपकी अज़मतों से अय आक़ा सब को वाक़िफ़ कराते रहेंगे।

कतअ शरीफ

नूर मोहम्मद, नूर अंसारी, अशोक नगर (बून्दी राज.)

लिक्खें बताओ कैसे क़सीदा मदार का।
वलियों में बहुत आला है रूतबा मदार का।

इतना यक़ीन है मुझें बख्शिश का अपनी नूर।
क्यूँ के हमारे पास है शज़रा मदार का।

पैदाइश शरीफ

हजरत सैयद बदीउद्दीन जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू मुल्के शाम के मशहूर शहरे हलब के मोहल्ला जुनार में यकुम शव्वालुल मुकर्रम यानी ईद के दिन सन 242 हिजरी में सुब्ह सादिक के वक्त पीर के दिन सैयद किद्वतुद्दीन अली हलबी रदीअल्लाहो तआला अन्हू के घर सैयदा फातिमा सानिया रदीअल्लाहो तआला अन्हा के शिकमें मुबारक से पैदा हुये।आप नजीबुत्तरफैन सैयद हैं जैसा के खुद हज़रत सैयद बदीउद्दीन अहमद जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने अपना हस्बो नसब इस तरह बयान फरमाया है के में हलब का रहने वाला हूँ मेरा नाम बदीउद्दीन है माँ की तरफ से हसनी और बाप की तरफ से हुसैनी सैयद हूँ मेरे नानाए मोहतरम मुस्तफा जाने आलम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जिनकी तारीफो सताइश दो जहान में की जाती है।

रहमते कौनैन का जिसको घराना चाहिए
उसको कुतबे दो जहाँ के दर पे आना चहिए

आपकी तौसीफ लिखने के लिए कुतबुल मदार
काविशे अहले कलम को एक जमाना चाहिए

आप ने पैदा होते ही पढ़ा **अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मोहम्मदन अबदुहू व रसूलुहू** जिसे हाजिरीने मजलिस ने बगौर समाअत किया।

इस्मे ग्रामी

हूजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू के वालिदे बुजुर्गवार हजरत सैयद किद्वतुद्दीन अली हल्बी रदियल्लाहो तआला अन्हो ने आप का नाम अहमद रखा और दरबारे रिसालत से बदीउद्दीन मुनतखिब हुआ और कुन्नियत अबू तुराब है बाज ममालिक में अहमद जिन्दान सूफ के नाम से भी मशहूर है अहले तसव्वुफ और अहले मारफतो

हकीकत आप को अब्दुल्लाह कुतबुल अक्ताब कुतबुल मदार फर्दुल अफराद कहते है।(जिन्दा वली ,जिन्दा शाह मदार, मदारे दो जहाँ,मदारे आलम,कुत्बुल मदार,मदारुल आलमीन,शम्सुल अफ्लाक)बगैरा आप के अल्काबो मरातिब हैं।

तालीमो तरबियत

शेखे जमाना कुतबे रब्बानी हजरत मौलाना हुजैफा शामी रदीअल्लाहो तआला अन्हू से हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने तालीमो तरबियत हासिल की जो उलूमे जाहिरी के अलावा उलूमे बातिनी के बेशुमार गौहर अपने कलबो नजर में समेटे हुए थे जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने छोटी सी उम्र में दीगर उलूमो फुनून के साथ साथ इल्मे हदीस,इल्मे फिक में भी कमाल हासिल कर लिया। और आप मोहद्दिसे दोरां मशहूर हो गए।कभी कभी कुरआनो हदीस में ऐसी इल्मी बारीकियां और आरिफाना नुकात बयान फरमा देते जिसे उलमाऐ जाहिर समझने से कासिर रहते थे ये कमालो खूबी देख कर आपके उस्ताज हजरते हुजैफा शामी रदीअल्लाहो तआला अन्हू फरमाया करते थे मुझे यकीने कामील है ये बच्चा अपने जमाने का बहुत बड़ा अल्लाह का वली ए कामिल होगा ।

बैतो खिलाफत

हूजूर सैयद बदीउद्दीन जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू सुल्तानुल आरिफीन हजरत ख्वाजा बायजीद बुसतामी उर्फ तैफूर शामी रदीअल्लाहो तआला अन्हू के मुरीदो खलीफा हैं।मदारे पाक का शजरए बैयत यूँ है

1. हजरत सैयद बदीउद्दीन जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू उनके पीर।
2. हजरत ख्वाजा बायजीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी रदीअल्लाहो तआला अन्हू उनके पीर।
3. हजरत ख्वाजा हबीब अजमी रदीअल्लाहो तआला अन्हू उनके पीर

4. हजरत ख्वाजा हसन बसरी रदीअल्लाहो तआला अन्हू उनके पीर हजरत मौला अली मुश्किल कुशा कर्रमल्लाहू वजहुल करीम रदीअल्लाहो तआला अन्हू उनके पीर।

5. हमारे प्यारे नबी प्यारे प्यारे रसूल हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैही वसल्लम है।

इस शजरे को पढ़ कर अल्लामा शोहरत अदीब का शेर याद आता है ।

अली बसरी हबीबो बायजीद हजरत बदीउद्दीन
बहुत ही मुख्तसर शजरा मदारुल आलमीं का है

जियारते मक्कओ मदीना

जाहिरी उलूमो फुनून में कमालो खूबी हासिल कर लेने के बाद हुजूर जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने इल्मे बातिन के हुसूल की तरफ तवज्जो फरमाई यहाँ तक के यादे इलाही के जौको शौक ने आपको जियारते हरमैन शरीफैन की तरफ कदम बढ़ाने को बेचेनो बेकरार कर दिया। एक रोज आप ने अपने वालिदे बुजुर्गवार से हरमैन शरीफैन को जाने की इजाजत तलब की वालिदे बुजुर्गवार ने इस नेक इरादे को देखकर आपकी होसला अफजाई फरमाई और इजाजते हरमैन शरीफैन मरहम्मत फरमा दी और आप बड़े जौको शौक के साथ मक्कओं मदीना पाए पयादा रवाना हो गए आप ने सब से पहले अरकाने हज्जो उमरा अदा किये फिर उसके बाद अपने जद्दे करीम हुजूर सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहों अलैहि वसल्लम के शहरे मदीनए मुनव्वरा की तरफ सफर शुरू किया चन्द दिनों की मुसाफत तय कर के आप शहरे रसूले मकबूल सल्लल्लाहों अलैहि वसल्लम में दाखिल हो गए इसके बाद आप ने सबसे पहले रौजए रसूल सल्लल्लाहों अलैहि वसल्लम पर हाजिरी दी और रहमते तमाम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहों अलैहि वसल्लम ने आप सैयद बदीउद्दीन अहमद जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू को अपने दामने रहमत में ढाप लिया और अपनी जियारत से मुशर्रफ फरमा कर खास चश्मए अहमदी से सैराब कर के हुक्म फरमाया बदीउद्दीन अब तुम हिंदुस्तान जाओ और वहां के कुफ्रो जलालत के अँधेरे को नूरे मुहम्मदी से जगमगा दो और मख्लूके

खुदा को तौहीदे खुदाबंदी और रिसलते मुहम्मदी से आगाह फरमा दो हुजूर जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने अलअमरो फौकुल अदब के तहत सर तस्लीम खम किया और समन्दरी सफर जहाज़ के जरिये शुरू कर दिया ये पहला सफर था हिंदुस्तान आने का जिसको हुजूर जिंदा शाहमदाररदीअल्लाहो तआला अन्हू ने जहाज़ पर सवार हो कर शुरू किया लेकिन मंजिले मक्सूद तक यानी हिंदुस्तान तक उस जहाज़ ने आप को नहीं पहूँचाया क्यूँ के जहाज़ कुफ्फारो मुशरिकीन से भरा हुआ था हुजूर जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने दीने मतीन की तबलीग करना शुरू कर दी नाअहलो ने इनकार कर दिया खल्लाके कायनात पाक परवर दिगारे आलम कुफ्फारो मुशरिकीन के इनकार पर बड़ा गज़बनाक हुआ और समन्दर में बड़े ज़ोर का तूफान बरपा हुआ जिसके सबब जहाज तूफान की ज़द में आकर पाश पाश हो गया और अल्लाह पाक ने अपने महबूब बन्दे को उस टूटे हुए जहाज़ के एक तख्ते के जरिया हिंदुस्तान के बंदरगाह खम्बात सूबए गुजरात पहुंचा दिया

आमदे हिंदुस्तान

किताब तारीखे सलातीने शर्किया व सूफियाए जौनपुर में लिखा है के हुजूर सैयदना सैयद बदीउद्दीन अहमद जिंदा शाह मदार कद्दसा सिर्रहू उस वक्त हिंदुस्तान तशरीफ लाये जब यहाँ मुसलामानों का नामो निशान नहीं था,मुहम्मद बिन कासिम अल्वी की हुकूमत ज़वाल पज़ीर हो चुकी थी। हजरत मौलाना मुहम्मद कैसर रजा शाह हनफी अगस्त 2012ईस्वी में माहनामा दम मदार के इदारिया में लिखते हैं के हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर बाज़ाप्ता तरीके से मुकम्मल तबलीगी दस्तूरो निज़ाम ले कर आने वाले औलियाए किराम व मशाईखे ज़विल एहतराम में सबसे पहली ज़ात शाहकारे कुदरत मम्बए इल्मों हिकमत कुत्बे वेहदत हुजूर पुरनूर सैयदना सैयद बदीउद्दीन अहमद कुत्बूल मदार जिंदा शाह मदार हलवी मकनपूरी कद्दसा सिर्रहुल अज़ीज की है इसी अव्वलियत की बुनियाद पर असहाबे तहकीको नज़र आप को हिंदुस्तान का अव्वल पीराने पीर भी कहते हैं ।सन 282 हिजरी

मै आप सबसे पहले हिंदुस्तान के सबसे मशहूर सूबए गुजरात में एक जगह जो साहिले बंदरगाह खम्बात के नाम से मशहूर है वहाँ पर तशरीफ लाये जहाँ आप के कदमों के निशान आज भी मौजूद हैं जिनकी लोग जियारत करते हैं और नजरों नियाज़ पेश करते हैं और फैज़े मदारुल आलमीन से मालामाल होते हैं,ये वही गुजरात का साहिल बंदरगाह खम्बात है जिस जगह सरकारे दो आलम रहमते तमाम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुजूर मदारे पाक रदीअल्लाहो तआला अन्हू को बकमाले शफकत अपनी आगोशे रहमत में बिठा कर अपने दस्ते मुबारक से नौ तआमे मलकूती के लुकमे खिला कर और एक हुल्लए बहेशती जेब तन कराके यानी जन्नती पैराहन पहनाकर इरशाद फरमाया अय बदीउद्दीन अब तुमको खाने और पीने की जरूरत नहीं हैं और ये जन्नती लिबास तुम्हारा न कभी मैला होगा और ना कभी पुराना और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना नूरानी हाथ आप सैयद बदीउद्दीन अहमद जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू के चेहरे पर फेर दिया जिसके सबब से आपका चेहरए मुबारक इस कदर रौशन और ताबिंदा हो गया के देखने वाले रूखे रोशन की तजल्लियों को देखकर बे इख्तियार सज्दा रेज़ हो कर पढ़ लेते कालिमा और पुकार उठते थे जब अल्लाह के इस महबूब के जमाल का ये आलम है तो उस खालिके कायनात के हुस्नो जमाल का आलम क्या होगा।हजरत गुलाम अली नक्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह अपने मल्फूजात में इसी तरफ इशारा फरमाते हैं के हजरत बदीउद्दीन शाह मदार कद्दसा सिर्रहू कुतबुल मदार थे और बहुत अजीम शान वाले थे, आपने दुआ की थी के इलाही मुझे भूख प्यास न लगे और मेरा लिबास मैला पुराना न हो वैसे ही हुआ के इस दुआ के बाद बक़िया पूरी उम्र में आप ने कुछ न खाया पिया और आप का लिबास मैला पुराना नहीं हुआ वही एक लिबास विसाल तक काफी रहा।

इसके अलावा आपने हिंदुस्तान के चप्पे चप्पे का तब्लीगी दौरा किया और मखलूके खुदा को शरीयते मुहम्मदुररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आगाह फरमाया।

सदायें गूँजती हैं हिन्द में अल्लाहो अकबर की
जो सच पूछो तो ये सदका मदारुल आलमीं का है

इसके आलावा तारीख में यहाँ तक के है के आपने सारे जहाँ का तबलीगी दोरा किया शायद ही कोई जगह बाकी हो जहाँ आप न गए हो इसी लिए तो आपको सय्याहे आलम भी कहा जाता है।
अल्लामा शोहरत अदीब ने क्या ही खूब कहा है के

मेरे सरकार ने शोहरत न छोड़ी सर जमीं कोई
जहाँ देखो वहाँ चिल्ला मदारुल आलमीं का है

आपने हिंदुस्तान से सात बार पेदल चलकर हज किया सातों बार अलग अलग रस्तों से गए और अलग अलग रास्तों से वापस आये सिर्फ इशाते दीने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के खातिर।
इसी लिए हजरत अल्लामा ख्वाजा सैयद मिसबाहुल मुराद जाफरी फरमाते है के

चीनो अरब ईरानो फारस इंडोनेशिया लंका
जापानो जर्मन हो या हो भारत और अफ्रीका
सरे जहां में तुमने किया इस्लाम का है प्रचार
करम हो जिंदा शाह मदार करम हो जिंदा शाह मदार

लताइफे अशरफी के हवाले से मीराअतुलअसरार में लिखा है के एक मर्तबा मख्दूमे अशरफ जहाँगीर समनानी और हुजूर सैयद बदीउद्दीन जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू मक्कए मोअज्जमा के सफर में दोनों बुजुर्ग एक दुसरे के हमसफर थे मक्कए मोअज्जमा की जियारत के बाद हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू हिन्दुस्तान चले आये लेकिन मीर सैयद अशरफ जहाँगीर सिम्नानी रदीअल्लाहो तआला अन्हू मदीना मुनव्वरा नजफ कर्बला और रूम की तरफ चले गए।

चिल्ला गाहें

हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू के सारे जहाँ में चिल्ले पाए जाते है जिनकी तादात का शुमार करना मुमकिन नहीं है लेकिन हिन्दुस्तान में तकरीबन 1442 चिल्लागाहें है जहाँ पर आपने बैठ कर दीने इस्लाम की इशाअत की और अपने रब की बेहतरीन तरीके से इबादतो रियाजत की।

वो कैसे समझे जो महरूमे रुत्बा दानी है
दरे मदार विलायत की राजधानी है
मेरे मदार ने बख्शा है हिन्द को ईमां
जो माने न इसे ये उसकी बेईमानी है

शाहों के तकियाँ

साथ ही साथ हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने दीने इस्लाम का एक और बहुत ही बड़ा काम अंजाम दिया जिसे कोई झुटला नहीं सकता क्योंकि आप ही ने हिंदुस्तान में 3,26,000 तीन लाख छब्बीस हजार तकियाँ बनाये ये उस वक्त की बात है जब हिंदुस्तान में मदरसे और मस्जिदें बहुत ही कम थे उस वक्त हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने हर तकिया पर एक एक शाह कबिले के बुजुर्ग को बिठाकर उन तकियों पर मस्जिद और मदरसों में जो काम होता है वो काम उन तकियों पर शुरू करवाया और कौम को मुखातिब करके फरमाया ये हमारे ही सिलसिले के बुजुर्ग है तुम इनसे दीने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें सीखो ये तुमको सब कुछ सिखाएँगे जो आप लोग नहीं जानते है और इनकी आप लोग खूब इज्जत करना।इसी लिए तो किसी शायर ने क्या खूब कहा था।

देखी होंगी जिन आँखों ने सीरत शाह कबीले की
उनसे पूछो दुनिया वालो कीमत शाह कबीले की

गुमराहों को राहे हिदायत पर चलने का सबक दिया
इसीलिए दुनियां भर में है शोहरत शाह कबिले की

आज भी लोग साहिबे तकिया की बहुत इज्जत करते है क्यूँ के मदारे पाक रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने फरमाया था इनकी इज्जत करना ये हमारे सिलसिले के बुजुर्ग हैं। आज भी जिस तकियाँ पर आप जाये और देंखें किसी एक न एक बुजुर्ग की मजार देखने को जरुर मिलेंगी जिनको लोग आज भी सैयद बाबा के नाम से जानते और मानते हैं।ये वही शाह कबिले के बुजुर्ग है जिनको जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने तकियों पर बिठाया था फरोगे दीने इस्लाम के लिए इसी लिए जो तकियादार शाह है वो अपने आप को बड़े फख्र के साथ मदारी लिखता है क्योंकि उनके बुजुर्गो का मदारी खानदान से बड़ा पुराना तअल्लुक है।

मकामे कुतबुल मदार

इस मुख्तसर किताबचे में जिस वली की चार साल कम 600 साला उम्र हो जिसमे 556 साल न खाना खाया और न पानी पिया और न लिबास बदला हो उसको बयान करना आसान नहीं है इस जगह चंद बुजुर्गों के अकवाल नक्ल करने की कोशिश की हे मुलाहिजा फरमाएँ। तफसीरे रुहुल बयान में अल्लामा इस्माईल हक्की लिखते है की कुतबुल मदार बराहे रास्त अल्लाह तआला से फैजो अहकाम हासिल करता है तमांम आलम पर कुतबुल मदार ही का तसर्रुफ चलता है अगर एक पल के लिए भी कुतबुल मदार का वजूद आलम के दरमियान से हटा दिया जाये तो सारा आलम दरहम बरहम होकर रह जाएगा वली को विलायत से माजूल करना विलायत को सल्ब करना उनके दर्जात में तरक्की देना कुतबुल मदार ही के इख्तियार में होता है। फतूहाते मक्किया मिराअतुल असरार वगेरा में है के सातो तबक जमीनों आसमान का निजाम कुतबुल मदार ही के सुपुर्द होता है अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक कुतबुल मदार ही का हुक्म चलता है।सारे अकताब कुतबुल मदार के मा तहत होते हैं। कुतबुल मदार जिस वली को

चाहें माजूल कर दे और जिसे चाहें विलायत अता कर दे।
इसी तसर्रुफो इख्तियार के मुतअल्लिक हकीमुल उम्मत बाबाए कोमो मिल्लत हजरत अल्लामा सैयद बाबा वली शिकोह रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फरमाते हैं के

तेरा इख्तियारो मन्सब कोई जनता नहीं है
तू मदार हर दो आलम तेरे हाथ क्या नहीं है

तेरा उम्र भर का रोज़ा ये बता रहा है हमको
तेरे मिस्ल औलिया में कोई दूसरा नहीं है

इसके अलावा हजरत सैयद नसीरुद्दीन चिराग दहेलवी रहमतुल्लाह अलैहि के मुरीदो खलीफा हजरत मीर जाफर मक्की रहमतुल्लाह अलैह बहरुल मआनी में तहरीर फरमाते है के कुतबुल मदार का इख्तियार ये है के अगर वो चाहें तो अक्ताब को कुत्बियत से मजूल कर दें और मिन जानिबिल्लाह किसी काम पर मामूर फरिश्तों को भी ब अताए परवरदिगार उनके कामों से माजूल करने का इख्तियार रखते हैं। लोहे महफूज के अहकामात को महो फरमा देना अर्शो कुर्सी को मुन्तकिल कर देना मुर्दों को जिंदा कर देना ये सब कुतबुल मदार के इख्तियार में होता है। इस जगह हजरत ख्वाजा सैयद मिसबाहुल मुराद साहब जाफरी का बड़ा प्यारा शेर याद आता है के

आप जो चाहें तय हो जाएँ मेरे सारे मराहिल
आप को मुश्किल क्या है आसां करना मेरी मुश्किल

मुर्दों को जिंदा करने का आप को है अधिकार
करम हो जिंदा शाह मदार करम हो जिंदा शाह मदार

कुतबुल मदार उवैसी

हुजूर मलिकुल आरिफीन सैयद बदीउद्दीन जिन्दा शाह मदार मदारुलआलमीन रदीअल्लाहो तआला अन्हू के एक मुरीदो खलीफा हजरत काज़ी महमूद कन्तूरी रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने एक मर्तबा आप से अर्ज़ किया हुजूर अपना सिलसिला मुझे अता फरमायें।तो हुजूर जिन्दा रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने आप से इरशाद फरमाया अपना नाम लिखो फिर मेरा नाम रकम करो और फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इस्मे ग्रामी नक्श कर लो और सिलसिलए उवैसिया मदारिया से मुस्तफीज हो जाओ।

इसके अलावा हुजुर मखदूम अशरफ जहांगीर सिमनानी कछोछवी रदीअल्लाहो तआला अन्हू के लताइफ में है के फर्दुल अफराद गौषुल अगवाष जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू उवैसियुल मशरब बुजुर्ग गुजरे है आप बड़े आला मशरब वाले हैं आप उलूमे हीमिया ,कीमिया,रीमिया,और सीमिया में बड़ी कामिल दस तरस रखते थे। ये उलूम औलिया अल्लाह में कम ही लोगों को हासिल हैं और मखदूम अशरफ रदीअल्लाहो तआला अन्हू फरमाते हैं के जब मेरी मुलाकात हजरत मदार शाह बदीउद्दीन रदीअल्लाहो तआला अन्हू से हुई तो मैने बू वक्ते वापसी उन्हें शायाने शान रुखसत किया और आप ने मुझे खिरकए मोहब्बत यानी खिरकए खिलाफत अता फरमाया। शेखे तरीकत हजरत अल्लामा अल्हाज मुफ्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफील साहब हैदरी माहनामा दम मदार में लिखते हैं के ये इकरामो नवाजिश का सिलसिला सरकार सैयद बदीउद्दीन जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू पर खत्म नहीं हुआ बलके बिसाल के बाद भी साहिबाने जर्फो कल्ब को आप शर्फे उवैसियत से नवाजते रहे है चुनांचे वक़्त के वलीये कामिल सिलसिलए बरकातिया रजविया के 29 वें इमाम शेखे तरिकत हजरत मुहम्मद जमालुद्दीन उर्फ जमालुल औलिया रदीअल्लाहो तआला अन्हू कोड़ा जहानाबदी ने भी बिल वास्ता आप सैयद बदीउददीन जिंदा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू से फैजे उवैसिया हासिल फरमाया

(तजकिरए मशाईखे कादिरिया बरकातिया रजविया सफा 310)

खुलफाओ मुरीदीन

तजकिरए माशाइखे इजाम में हजरत मौलाना डॉक्टर आसिम आजमी लिखते है के हजरत जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू का दायरा इरशादो तबलीग का काफी वसी था और दराजी उम्र के सबब काफी से काफी लोगों को आप से फैजयाब होने का मौका मिला एक एक मजलिस में हजारहा हजार लोग ताइब होकर बैत हुए इसलिए मुरीदो और खुलफा की तादाद का शुमार करना मुमकिन नहीं है। चन्द अहम खुलफा के नाम ये है।

- हजरत सैयद अबू मुहम्मद अर्गून रदीअल्लाहो तआला अन्हू मकनपुर शरीफ।
- हजरत सैयद अबू तुराब फन्सूर रदीअल्लाहो तआला अन्हू मकनपुर शरीफ।
- हजरत सैयद अबुल हसन तैफूर रदीअल्लाहो तआला अन्हू मकनपुर शरीफ।
- हजरत सैयद मुहम्मद जानेमन जन्नती रदीअल्लाहो तआला अन्हू बिहार।
- हजरत काज़ी मुतहर कल्ला शेर रदीअल्लाहो तआला अन्हू मावर शरीफ।
- हजरत काज़ी महमूद कंतूरी रदीअल्लाहो तआला अन्हू।
- हजरत मौलाना हिसामुद्दीन सलामती रदीअल्लाहो तआला अन्हू।
- हजरत मौलाना सैयद अजमल बहराइची रदीअल्लाहो तआला अन्हू।
- हजरत सैयद जलालुद्दीन बुखारी रदीअल्लाहो तआला अन्हू बरेली शरीफ वगैरह।

इसके अलावा सरकार मदारे पाक रदीअल्लाहो तआला अन्हू के विदेशों में भी मशहूर खुलफा के मजारात हैं जो के अरसा दराज से मर्कजे रुश्दो हिदायत और मरजए खलायक बने हुये हैं और मखलूके खुदा आज भी उनके मजारात से अनवारों बरकाते खुदा बंदियों फयूजे मदारुल आलमीन रदीअल्लाहो तआला अन्हू हासिल कर रही है उन मुकद्दस खुलफा के नाम मुलाहिजा फरमायें।

* हजरत शेख सैयद ताहिर मदारी रहमतुल्लाह अलैह (अरब)।
* हजरत शेख जैनुल आबिदीन रहमतुल्लाह अलैह (मदीना शरीफ)।
* हजरत शेख मुहम्मद शमसुद्दीन फीरोजपूरीरहमतुल्लाह अलैह (चीन)।
* हजरत शेख जहीरुद्दीन दमिश्की रहमतुल्लाह अलैह (दमिश्क)।
* हजरत शेख बकाउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह (ईरान)।
* हजरत मौलाना सूफी फखरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह (अफगानिस्तान)।
* हजरत शेख बशीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह (हलब)।
* हजरत जाहिद बख्तानियुल मदारी रहमतुल्लाह अलैह (रूम)।
* हजरत शेख मुहम्मद यूसुफ औताद मदारी रहमतुल्लाह अलैह (बुखारा)।
* हजरत शेख अब्दुल कादिर जमीरी रहमतुल्लाह अलैह(श्रीलंका)।
* हजरत शेख इस्माईल खिलजी रहमतुल्लाह अलैह बिन सैयद अबू दाऊद रहमतुल्लाह अलैह (सिस्तान)।
* हजरत शेख अब्दुल वाहिद मदारी रहमतुल्लाह अलैह (नजफ अशरफ)।
* हजरत मौलाना शाह अब्दुल अजीज शीरीरहमतुल्लाहअलैह (मालवा)।
* हजरत शाह फजलुल्लाह मदारी रहमतुल्लाह अलैह (सिस्तारा)।

सिलसिलए मदारिया का फैज़

शेखे तरीकत हजरत अल्लामा अल्हाज मुफ्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इस्राफील साहब हैदरी मदारी दरुन्नूर मकनपुर शरीफ अपनी किताब फैजाने सिलसिलए मदारिया में लिखते हैं के

तरीकतो तसव्वुफ और इरशादो सुलूक में सिलसिलए मदारिया ऐसा आफताबे जहाँताब है जिसकी जियापाशियों से एशियाओ यूरोप में तरीकतो तसव्वुफ के तमाम सलासिल और इरशादों सुलूक के तमाम मराकिज बिला वास्ता या बिल वास्ता किसी न किसी तौर से फैजयाब हुए बगैर न रह सके अरबाबे सुलूक और असहाबे तसव्वुफ ने सराहतन या जिम्नन इसका इजहार भी किया है चूँकि सिलसिलए मदारिया सिर्फ पांच या छ वास्तों से रहमते आलम आफताबे करम हुजूर नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करीबतर सिलसिला है और फैजाने मुहम्मदिया और बरकाते अहमदिया का बहुत करीब तकसीमकार है इस पर मजीद इनआमे खास ये

है की ये शरफे उवैसियत से भी मुमताज है इन्हीं खसायसों इम्तियाजात की वजह से तरीकतो मारफत की सज्जादगी पर मसनद नशीन अहले दिल ने अपनी कामयाबियो कामरानी की तकमील पर मोहर लगाई है और इसकी बर्कातो हसनात से अपने दामने मुराद को पुर किया है
अब जेल में उन मुकद्दस हस्तियों के सलासिल का तजकिरा जिनके बानी बिला वास्ता या बिल वास्ता किसी न किसी तौर से फैजे मदारुल आलमीन से सैराबो मुस्तफीज हुये है।
चन्द नाम ये हैं

- हजरत सैयद जमालुल औलिया कोडा जहानाबादी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत सैयद शाह बरकतुल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत सैयद मुहम्मद कल्पिवी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत शेख अबुलउला अहरारी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत सैयद शाह उवैस बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत सैयद अबुल बरकात बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह।
- हजरत सैयद अबुल हुसैन नूरी मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह।
- आला हजरत इमाम अहमद रज़ा खाँ फाजिले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह।
- हुजूर मुफ्तिए आजमे हिन्द मुस्तफा रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अलैह वगेरह।

इन तमाम बुजुर्गो को जिस तरह तमाम सिलसिलो की इजाजतो खिलाफत हासिल है जैसे कादिरिया, चिश्तिया, सोहर्बरदिया, नक्शबंदिया, वगेरह। इसी तरह इन तमाम बुजुर्गो को सिलसिलऐ बदीया मदारिया की भी इजाजतो खिलाफत हासिल है
(सवानेह आला हजरत,तजकिरए मशाइखे कादिरिया बरकातिया रजविया)

निजामी कादिरी चिश्ती सोहर्वरदी के हों, नूरी
सभी को सिलसिला पहुँचा, मदारूंल आलमीं का है।

करामत

हुजूर जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू की सब से बड़ी करामत तो ये थी के आप ने 556 साल तक न खाना खाया और न पानी पिया जो कोई आप को देख लेता वो पढ़ लेता ला इलाहाइलल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह और पुकार उठता जब कुतबुल मदार का ये आलम है तो अहमदे मुख्तार का आलम क्या होगा।

आमदे मकनपुर

हुजूर मलिकुल आरिफीन हजरत सैयद बदीउद्दीन मदारूल आलमीन जिन्दा शाह मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू 818 हिजरी से मकनपुर तशरीफ लाये जिसका इशारा हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप को फरमाया था के कन्नौज से जुनूब की तरफ एक बयाबान जंगल है और उस जंगल में एक तालाब है जहाँ या अजीज या अजीज की आवाज आती है तुम्हारे पहुँचते ही वहाँ की वो आवाज आना बन्द हो जाएगी वही तुम्हारा आखिरी मसकन होगा।

विसाल

हजरत सैयद बदीउद्दीन कुतबुल मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू 17जमादिउल अव्वल 838 हिजरी को इस दारेफानी से रेहलत फरमाते है।दाराशिकोह कादरी रहमतुल्लाह अलैह ने सफीनतुल औलिया में लिखा है के हर साल जमादिउल अव्वल के महीने में आप के उर्स की तकरीब मनाई जाती है जिसमे पांच लाख लोगों की शिरकत होती है और दूर दूर से जायरीन आते है और नजरो नियाज पेश करते है और इतनी मुद्दत गुजर जाने के बाद आज भी अजीबो गरीब वाकियात देखने में आते है।

गुस्ल शरीफ

हुजूर मलिकुल आरिफीन हजरत सैयद बदीउद्दीन मदारूल आलमीन कुतबुल मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू की हयात ही में आप के खुलफाओ मुरीदीन ने आप से पूछ लिया था के हुजुर आपको गुस्ल कौन देगा? हजरत सैयद बदीउद्दीन कुतबुल मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू ने फरमाया हमारे गुस्ल का इंतजाम अल्लाह तआला गैब की तरफ से फरमाएगा।

नमाजे जनाजा

हुजूर मलिकुल आरिफीन हजरत सैयद बदीउद्दीन मदारूल आलमीन कुतबुल मदार रदीअल्लाहो तआला अन्हू के खुलफाओ मुरीदीन ने ये भी पूछा और हुजुर आप की नमाजे जनाजा कौन पढाएगा?
आपने इरशाद फरमाया हिसामुद्दीन सलामती (रदीअल्लाहो तआला अन्हू) जौनपुर से खुद चलकर के आयेंगे और हमारी नमाजे जनाजा पढ़ाएंगे ।